Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति

अध्याय - 6

लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट

भाग - 1

Satyaveer Yadav

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

इस अध्याय में :

- 1975 के आपाकाल की पृष्ठभूमि।
- आपातकाल लागू करने के कारण।
- आपातकाल की आवश्यकता?
- आपातकाल लागू करने का व्यावहारिक अर्थ क्या था?
- दलगत राजनीति के हिसाब से आपातकाल के क्या परिणाम हुए?
- आपातकाल से भारतीय लोकतंत्र ने क्या सबक सीखे?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1967 के बाद

- इंदिरा गांधी की लोकप्रियता चरम पर
- दलगत प्रतिस्पर्धा तीखी एवं ध्रुवीकृत
- सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार की कई पहलकदमियों को संविधान के विरुद्ध माना
  - कांग्रेस का मानना कि अदालत का ये रवैया संविधान की सर्वोच्चता के खिलाफ
- राजनीति हद से ज्यादा व्यक्तिगत
- इंदिरा गांधी और विरोधियों के बीच गहरे मतभेद

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

आर्थिक संदर्भ

- औद्योगिक विकास की दर कम
  - बेरोजगारी बढ़ी
    - खर्चे को कम करने के लिए सरकार ने कर्मचारियों का वेतन रोका
- अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में कई गुना बढ़ोत्तरी
  - विभिन्न चीजों की कीमतों में भी वृद्धि
- बांग्लादेश संकट से अर्थव्यवस्था पर भारी बोझ
- 1972–73 में मानसून असफल
  - खाद्यान्न का उत्पादन 8 प्रतिशत से भी कम
- 1971 का नारा गरीबी हटाओ
  - 1971–72 के बाद के सालों में भी देश की सामाजिक–आर्थिक दशा में कोई खास सुधार नहीं

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

रेल हड़ताल

1974 - जॉर्ज फर्नांडिस के नेतृत्व में

- सरकारी कर्मचारियों में असंतोष
- आर्थिक स्थिति की बदहाली से पूरे देश में असंतोष। उठते छात्रों के विरोध के स्वर।
- गैर-कांग्रेसी दलों ने कारगर तरीके से जन-विरोध की अगुवाई की।
- संसदीय राजनीति में विश्वास न रखने वाले कुछ मार्क्सवादी समूहों की सक्रियता बढ़ी।
- ऐसे समूह पश्चिम बंगाल में सबसे ज्यादा सक्रिय।
- पश्चिम बंगाल की सरकार ने इनको दबाने के लिए कठोर कदम उठाये।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

18 May 1974 – प्रथम परमाणु परीक्षण

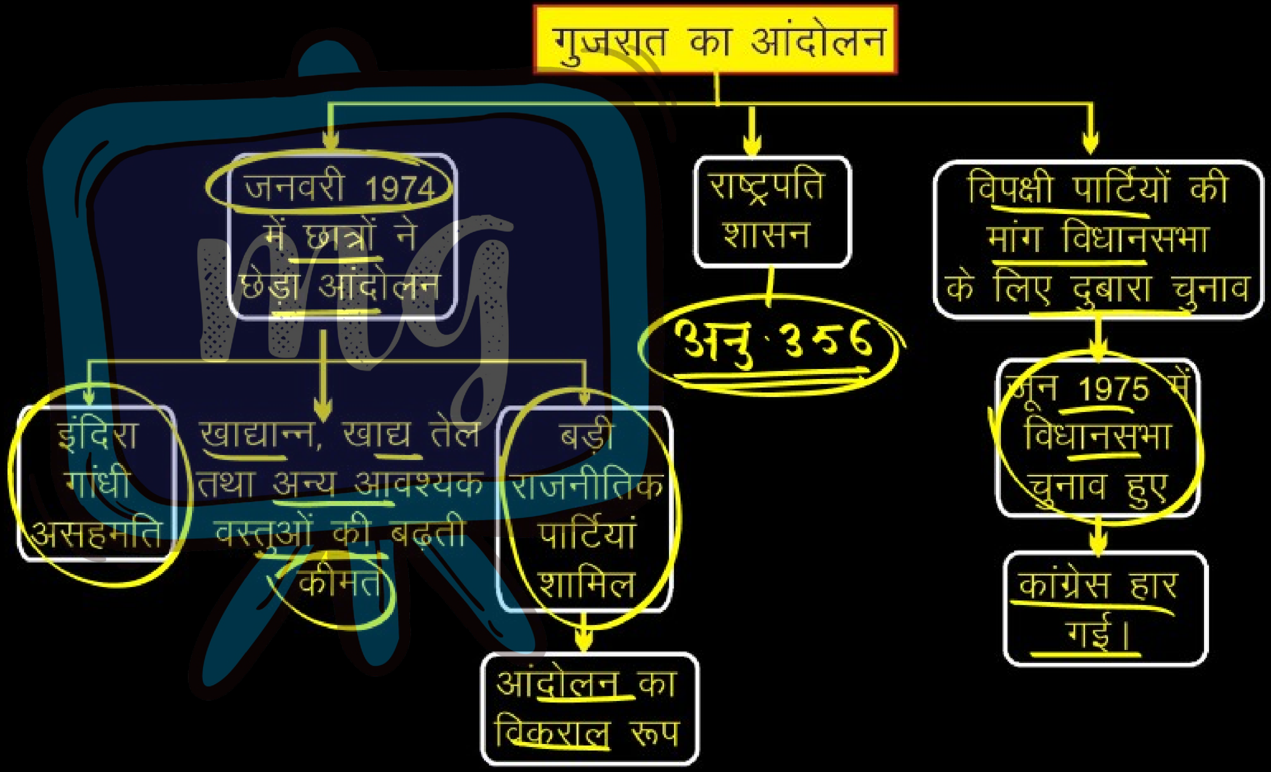

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

बिहार का आंदोलन

मार्च 1974 में छात्रों ने छेड़ा आंदोलन

- बढ़ती कीमतें खाद्यान्न का अभाव बेरोजगारी और भ्रष्टाचार
- सम्पूर्ण क्रांति
- जयप्रकाश नारायण को बुलावा
  - निमंत्रण स्वीकार लेकिन शर्त
    - आंदोलन अहिंसक रहेगा और अपने को सिर्फ बिहार तक सीमित नहीं रखेगा
    - इस प्रकार छात्र आंदोलन ने राजनीतिक चरित्र ग्रहण किया
  - सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक दायरे में सम्पूर्ण क्रांति का आह्वान
  - बिहार की कांग्रेस सरकार को बर्खास्त करने की मांग

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- आंदोलन का प्रभाव राष्ट्रीय राजनीति पर पड़ना शुरू हुआ।
- जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन के साथ ही साथ रेलवे के कर्मचारियों ने भी एक राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आह्वान किया।
- इससे रोजमर्रा के कामकाज ठप्प हो जाने का खतरा।
- 1975 में जेपी ने जनता के 'संसद मार्च' का नेतृत्व किया।
- जयप्रकाश नारायण को अब भारतीय जनसंघ, कांग्रेस (O) भारतीय लोकदल, सोशलिस्ट पार्टी जैसे गैर-कांग्रेसी दलों ने समर्थन किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जेपी द्वारा आंदोलन की अपनायी गयी रणनीति की आलोचनाएँ :-

- गुजरात और बिहार, दोनों ही राज्यों के आंदोलन को कांग्रेस विरोधी माना गया।
- कहा गया कि ये आंदोलन राज्य सरकार के खिलाफ नहीं अपितु इंदिरा गांधी के खिलाफ चलाये गये हैं।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

न्यायपालिका से संघर्ष

तीन संवैधानिक मसलें :-

1. क्या संसद मौलिक अधिकारों में कटौती कर सकती है।

   SC - सरकार ऐसा नहीं कर सकती।

2. क्या संसद संविधान में संशोधन करके संपत्ति के अधिकार में काँट-छांट कर सकती है?

   SC - सरकार संविधान में इस तरह का संशोधन नहीं कर सकती कि अधिकारों की कटौती की जाये।

3. संसद ने यह कहते हुए संविधान में संशोधन किया कि वह नीति-निर्देशक सिद्धांतों को प्रभावकारी बनाने के लिए मौलिक अधिकारों में कमी कर सकती है।

   SC ने इसे भी निरस्त किया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1973 - हैगड़े, ग्रोवर, शैलट → A.N.R

1971 → सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग

इलाहाबाद

- इससे सरकार और न्यायपालिका के बीच तनाव आया।

संकट की परिणति - केशवानंद भारती मुकदमा।

- 1973 में केशवानंद भारती के फैसले के तुरंत बाद मुख्य न्यायाधीश का पद खाली हुआ।
- सरकार ने तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों की अनदेखी करके न्यायमूर्ति ए. एन. के. को मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया।
- जिन तीन न्यायाधीशों की अनदेखी की गयी उन्होंने सरकार के इस फैसले के विरुद्ध निर्णय दिया।

इस संघर्ष का चरमबिंदु - एक उच्च न्यायालय ने इंदिरा गांधी के निर्वाचन को अवैध घोषित कर दिया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

इंदिरा गांधी के निर्वाचन को अवैध करार

- 12 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला
  - न्यायाधीश जगमोहन लाल सिन्हा
  - समाजवादी नेता राजनारायण द्वारा दायर चुनाव याचिका के मामले में
    - इंदिरा गांधी के निर्वाचन को चुनौती तर्क – चुनाव प्रचार में सरकारी कर्मचारियों की सेवा का इस्तेमाल किया गया।
- इंदिरा गांधी अब कानूनन सांसद नहीं रहीं
  - 6 माह की अवधि में सांसद निर्वाचित नहीं होती है तो प्रधानमंत्री नहीं रह सकती
- 24 जून 1975 को सर्वोच्च न्यायालय का इस फैसले पर आंशिक स्थगनादेश
  - इस फैसले को लेकर की गई अपील की सुनवाई नहीं होगी तब तक इंदिरा गांधी सांसद बनी रहेंगी लेकिन वे लोकसभा की कार्यवाही में भाग नहीं ले सकती।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

संकट

- जयप्रकाश नारायण की अगुवाई में विपक्षी दलों ने इंदिरा गांधी के इस्तीफे के लिए दबाव बनाया।
- इन दलों ने 25 जून 1975 को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विशाल प्रदर्शन किया।
- जेपी ने सेना, पुलिस और सरकारी कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे सरकार के अनैतिक और अवैधानिक आदेशों की पालना ना करें।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

आपातकाल की घोषणा

- आधी रात 25 जून 1975 को देश में गड़बड़ी की आंशका पर आपातकाल की घोषणा
  - तड़के सबेरे बड़े पैमाने पर विपक्षी दल के नेताओं और कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी
- संघीय ढांचा व्यावहारिक तौर पर निष्प्रभावी
  - सारी शक्तियां केन्द्र के हाथों में

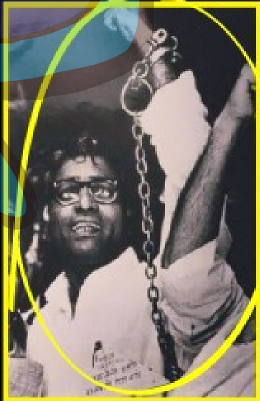

25 June 1975

आंतरिक अशांति

⇒ PM की सलाह पर आपातकाल राष्ट्रपति द्वारा

F.A. अहमद

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

परिणाम

- प्रेस की आजादी पर रोक (प्रेस सेंसरशिप)
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं जमात–ए–इस्लामी पर प्रतिबंध (RSS)
  - सांप्रदायिक गड़बड़ी की आशंका के मध्यनजर
- नागरिकों के मौलिक अधिकार निष्प्रभावी
- धरना प्रदर्शन और हड़ताल की अनुमति नहीं

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

MISA - 1971

COFEPOSA - 1974

अनु. 22

- सरकार ने निवारक नजरबंदी का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया।
- आपातकाल के दौरान निवारक नजरबंदी अधिनियमों का प्रयोग करके बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां की गयीं।
- जिन राजनीतिक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया वे 'बंदी प्रत्यक्षीकरण' याचिका का सहारा लेकर अपनी गिरफ्तारी को चुनौती नहीं दे सकते थे।
- नागरिकों को उनकी गिरफ्तारी का कारण बताना आवश्यक नहीं है - सरकार
- अनेक उच्च न्यायालयों के फैसले - आपातकाल की घोषणा के बावजूद अदालत किसी व्यक्ति द्वारा दायर की गयी ऐसी बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका को विचार के लिए स्वीकार कर सकती है, जिसमें उसने अपनी गिरफ्तारी को चुनौती दी है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- अप्रैल 1976 में सर्वोच्च न्यायालय की संवैधानिक पीठ ने उच्च न्यायलयों के फैसले को पलट दिया औरसरकार की दलील मान ली।
- सर्वोच्च न्यायालय के सर्वाधिक विवादास्पद निर्णयों में एक।
- इसका अर्थ - सरकार आपातकाल के दौरान नागरिक से जीवन और आजादी का अधिकार वापस ले सकती है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

आपातकाल का विरोध

- जो राजनीतिक कार्यकर्ता गिरफ्तारी से बच गए वो भूमिगत हो गए।
  - उन्होंने सरकार के खिलाफ मुहिम चलायी।
- 'इंडियन एक्सप्रेस' 'स्टेटमैन' जैसे अखबारों ने प्रेस पर लगी सेंसरशिप का विरोध किया।
  - जिन समाचारों को छापने से रोका जाता था उनकी जगह ये खाली छोड़ देते थे।

- सेंसरशिप को धत्ता बताते हुए अनेक न्यूजलेटर और लीफलेट्स निकलें।
- पद्मभूषण से सम्मानित कन्नड़ लेखक शिवराम कारंत और पद्मश्री से सम्मानित हिंदी लेखक फणीश्वर नाथ रेणु ने अपनी अपनी पदवी लौटा दी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- इंदिरा गांधी के मामले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले की पृष्ठभूमि में संविधान में संशोधन हुआ।
- इस संशोधन द्वारा प्रावधान किया गया कि प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति पद के निर्वाचन को अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती।
- 42वें संविधान संशोधन के जरिए अनेक बदलाव किये गये।
- जिनमें से एक था देश की विधायिका के कार्यकाल को 5 वर्ष से बढ़ाकर 6 वर्ष करना।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

"शाह जांच आयोग"

आपातकाल भारतीय राजनीति का सबसे विवादास्पद प्रकरण

1977

- आपातकाल की घोषणा की जरूरत को लेकर विभिन्न दृष्टिकोण
- सरकार ने संविधान प्रदत्त अधिकारों का इस्तेमाल करके लोकतांत्रिक कामकाज को ठप्प कर दिया था।
- शाह आयोग ने अपनी जांच में पाया कि इस अवधि में बहुत सारी 'अति' हुई

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

क्या 'आपातकाल' जरूरी था?

सरकार के तर्क

- भारत में लोकतंत्र है और इसके अनुकूल विपक्षी दल को चाहिए कि अपनी वे निर्वाचित शासक दल को अपनी नीतियों के अनुसार शासन चलाने दें।
- बार-बार धरना प्रदर्शन और सामूहिक कार्यवाई लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं।
- लोकतंत्र में सरकार पर निशाना साधने के लिए लगातार गैर-संसदीय राजनीति का सहारा नहीं लिया जा सकता। इससे अस्थिरता पैदा होती है और प्रशासन का ध्यान विकास कामों से भंग होता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

CPI एवं कुछ अन्य दलों के तर्क (आपातकाल के दौरान कांग्रेस को समर्थन देना जारी रखा था) :

- भारत की एकता के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय साजिश की जा रही है।
- ऐसी सूरत में विरोध पर एक हद तक प्रतिबंध लगाना उचित है।
- जेपी जन आंदोलन का समर्थन की अगुवाई कर रहे थे, वह मुख्यतया मध्यमवर्ग का आंदोलन था और ये मध्यमवर्ग कांग्रेस की परिवर्तनकामी नीतियों के विरोध में था।

आपातकाल के बाद ने महसूस किया कि उसका मूल्यांकन गलत था और आपातकाल का समर्थन करना एक गलती थी।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

आपातकाल के आलोचकों के तर्क :-

- लोकतंत्र में लोगों को सार्वजनिक तौर पर सरकार के विरोध का अधिकार होना चाहिए।
- बिहार और गुजरात के चले विरोध आंदोलन ज्यादातर समय अहिंसक और शांतिपूर्ण रहे।
- देश के अंदरूनी मामलों की देख रेख का जिम्मा गृह मंत्रालय का होता है, गृह मंत्रालय ने भी कानून व्यवस्था के बाबत कोई चिंता नहीं जतायी थी।
- छोटी मोटी गड़बड़ियों को सरकार अपनी रोजमर्रा की अमल में आने वाली शक्तियों से भी रोक सकती थी।
- 'आपातकाल' जैसे अतिचारी कदम की जरूरत नहीं थी।
- खतरा देश की एकता और अखण्डता को नहीं -
  - शासक दल और स्वयं प्रधानमंत्री को था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आपातकाल के दौरान क्या–क्या हुआ?

- **सरकार ने कहा**
  - कानून व्यवस्था को बहाल करना, कार्यकुशलता बढ़ाना, गरीबों के हित के कार्यक्रम लागू करना।
  - 20 सूत्री कार्यक्रम की घोषणा
  - भूमि सुधार, भू–पुनर्वितरण खेतिहार मजदूरों के पारिश्रमिक पर पुनर्विचार प्रबंधन में कामगारों की भागीदारी बंधुआ मजदूरों की समाप्ति आदि
- **गरीब जनता को उम्मीद**
  - सरकार जिन कल्याण कार्यक्रमों के वायदे कर रही हैं उन्हें कारगर तरीके से लागू करेगी।
- **शुरूआती दिनों में मध्यमवर्गीय खुश**
  - विरोध–आंदोलन समाप्त सरकारी कर्मचारियों पर अनुशासन

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

आपातकाल के दौरान क्या–क्या हुआ?

- आलोचक
  - सरकार के ज्यादातर वायदे पूरे नहीं
  - प्रेस पर कई तरह की गैर कानूनी पाबंदियां
  - निवारक नजरबंदी का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल
    - शाह आयोग का आकलन – कि इस कानून के तहत कुल एक लाख ग्यारह हजार लागों को गिरफ्तार किया गया।
    - 676 नेताओं की गिरफ्तारी।
- पुलिस हिरासत में मौत व यातना की घटनाएं
- प्रधानमंत्री के छोटे बेटे उस वक्त किसी अधिकारिक पद पर नहीं प्रशासन पर उनका असर
  - दिल्ली में झुग्गी बस्तियों को हटाने व जबरन नसबंदी की मुहिम में उनकी भूमिका।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

आपातकाल के सबक

- भारत से लोकतंत्र को विदा कर पाना कठिन है
- संविधान में वर्णित आपातकाल के प्रावधानों के कुछ 'अर्थगत' उलझाव
  - सुधार – 'अंदरूनी' आपातकाल केवल 'सशस्त्र विद्रोह' की स्थिति में ही
    - आपातकाल की घोषणा की सलाह मंत्रिमंडल राष्ट्रपति को लिखित में दे।
- नागरिक अधिकारों के प्रति ज्यादा सजगता
  - आपातकाल के बाद न्यायपालिका में नागरिक अधिकारों की रक्षा में सक्रिय भूमिका निभायी।
    - नागरिक अधिकारों के कई संगठन वजूद में आये।

44 वें (सं.) 1978

आंतरिक अशांति

- मन्त्रिमण्डल की लिखित सलाह